# डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में युगीन सन्दर्भ

**संस्कृत विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु**
**प्रस्तावित**
**रूपरेखा**


शोधार्थिनी

**रेशमा कुमारी**
संस्कृत विभाग

शोध निर्देशिका :

**डॉ. (श्रीमती) अनीता**
संस्कृत विभाग
कला संकाय

**संस्कृत विभाग, कला संकाय**
**दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी)**
**दयालबाग़, आगरा–282005**

**(2020)**

शब्द और अर्थ के स्पर्धा रहित सद्भाव को साहित्य कहते हैं। भर्तृहरि ने साहित्य से विहीन मनुष्य को पशु की संज्ञा दी है–

**'साहित्य संगीतकला विहीनः साक्षात्पशु पुच्छ विषाणहीनः'।**

(नि.श. पृ.सं. 70, पद्यभाग–12)

वैदिक काल से ही साहित्य रचना का प्रादुर्भाव हुआ। लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रारम्भ वाल्मीकि–रामायण से माना जाता है। तत्पश्चात् महाभारत का स्थान आता है। संस्कृत साहित्य का आधुनिक काल विभिन्न दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस काल में अनेक विधाओं को समाहित किया गया है। साहित्य अत्यधिक पद्यात्मक रचनाओं से भरपूर रहा किन्तु आधुनिक साहित्य विभिन्न विधाओं जैसे– महाकाव्य, शतककाव्य, खण्डकाव्य, नीतिकाव्य, लघुकाव्य, नाटक, उपन्यास, कथा, निबन्ध, जीवन–संस्मरण आदि विषयों से परिपूर्ण है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य का आरम्भ कब से हुआ इस बात पर विद्वानों में मतभेद दिखाई देता है, परन्तु 18वीं शताब्दी से सभी विद्वान आधुनिक काल को स्वीकार करते हैं। आधुनिक काल में अनेकानेक विधाओं की रचना हुई है। रचना–वैविध्य के लिए संस्कृत का आधुनिक काल स्वर्णिम काल है। इस काल में महाकाव्य, गीतिकाव्य, दूतकाव्य, खण्डकाव्य, लघुकाव्य शतककाव्य, उपन्यास, ललित निबन्ध, निबन्ध, कहानी आदि तथा अत्याधुनिक विधाएँ गज़लकाव्य, हाइकू, तांका तथा सीजो इत्यादि विधाओं की संस्कृत में रचना हुयी जिसमें हृदय के उद्गारों को अभिव्यक्ति मिली जो आगे चलकर समाज के लिए जीवन यापन के साधन तथा नियम बने। ऋषियों के अनुभवों से आगामी सन्ततियों ने अपना मार्ग प्रशस्त किया तथा उन्हें अपने जीवन पथ–प्रदर्शक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार किया।

शोध विषय चयनित कवि डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी ने इनमें से अधिकतर विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है जिनमें से व्यंग्यकाव्य, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, लघुकाव्य तथा गीतकाव्य प्रमुख हैं।

आचार्य (डॉ.) प्रशस्यमित्र शास्त्री जी का जन्म 8 सितम्बर 1947 की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (विक्रम संवत् 2004) को बिहार प्रान्त के सीवान जिले के भैरवा स्टेशन के पास दोन नामक ग्राम में एक प्रसिद्ध आर्य समाजी परिवार में हुआ। डॉ. शास्त्री ने प्रारम्भिक शिक्षा का अध्ययन स्वामी त्यागानन्द जी के सानिध्य में रहकर किया। तत्पश्चात् वाराणसी में महापण्डित ब्रह्मजिज्ञासु के आश्रम में रहकर व्याकरण, महाभाष्य, निरुक्त तथा अन्य वेद–वेदांगों का अध्ययन किया। कुछ वर्षों तक श्री पं0 युधिष्ठिर जी मीमांसक के सानिध्य में विविध ग्रन्थों पर अनुसन्धान एवं उनके सम्पादन कार्य में सहयोग किया।

**प्रकाशित रचनाएँ–**

1. अभिनव संस्कृत गीत माला – 1975
2. आचार्य महीधर एवं स्वामी दयानन्द का यजुर्वेद भाष्य – 1984
3. हासविलास : (संस्कृत काव्य संकलन) – 1986
4. संस्कृत व्यंग्यविलास : (संस्कृत में सर्वप्रथम सचित्र व्यंग्यात्मक निबन्ध) – 1989
5. कोमल कण्टकावलिः (संस्कृत व्यंग्यकाव्य रचना, हिन्दी पद्यानुवाद सहित) – 1990 द्वितीय संस्करण, 2007 ई.
6. अनाघ्रातं पुष्पम् (संस्कृत कथा संकलन) – 1994
7. नर्मदा (संस्कृत काव्य संकलन) – 1997 ई.
8. आषाढस्य प्रथम–दिवसे (संस्कृत कथा संकलन) – 2001 ई.
9. अनभीप्सितम् (संस्कृत तथा संकलन) – 2007 ई.
10. व्यंग्यार्थ कौमुदी : (हिन्दी पद्यानुवाद सहित संस्कृत काव्य) – 2008 ई.
11. मामकीनं गृहम (कथा संग्रह) – 2016
12. हास्यं सुध्युपास्यम् (व्यंग्यकाव्य) – 2013 ई.

**प्रकाशाधीन रचनाएँ–**

1. नव्य व्यंग्यावलिः

2. आधुनिक संस्कृत लघुकथा

आरम्भ से ही आधुनिक संस्कृत साहित्य में मेरी रुचि रही है। आधुनिक कवियों की कृतियों का अध्ययन करने के लिये मैं प्रतिदिन पुस्तकालय जाती रही। एक दिन मुझे डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी की कृति 'कोमल कण्टकावलिः' प्राप्त हुयी जिसका मैंने गहन गध्ययन किया। अध्ययन करने के पश्चात् मेरे अन्दर उनकी अन्य कृतियों को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हुयी। मुझे एक अन्य कृति 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' प्राप्त हुयी जिसमें निहित हास्य व्यंग्य के माध्यम से सम–सामयिक घटनाओं का निरुपण किया गया है। इसलिये मैंने डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में युगीन सन्दर्भ' विषय का चयन किया है।

इस विषय पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। तदर्थ मैंने इस विषय का चयन शोध हेतु किया है।

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों पर अब तक शोध कार्यों का विवरण इस प्रकार है–

संस्कृत कथा साहित्य में डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री का योगदान – 2016

सुशील कुमार – महारथी दयानन्द वि0वि0 रोहतक (हरियाणा)

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुख्य रूप से अन्तर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

विद्वज्जनों से आग्रहपूर्ण निवेदन है कि सहृदय सुधीजन मुझे डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में युगीन सन्दर्भ विषय पर शोध–कार्य करने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे तथा क्षमाभाव से त्रुटियों को भुलाकर मेरा मार्गदर्शन करेंगे। विशय विशेशज्ञ के पराम" ्रानुसार दिये गये परिवर्तन रूपरेखा में कर दिये गये हैं।

## डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में युगीन सन्दर्भ

- **प्राक्कथन**

**प्रथम अध्याय– कवि एवं कृतियों का सामान्य परिचय**

(क) डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री का जीवन–परिचय

(ख) डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री का साहित्यिक परिचय

**द्वितीय अध्याय– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में सांस्कृतिक सन्दर्भ**

(क) लोक–संस्कृति

(ख) जीवन–मूल्य

(ग) राष्ट्रीय चेतना व राष्ट्र–कल्याण की भावना

(घ) सहिष्णुता एवं विश्व–बन्धुत्व की भावना

**तृतीय अध्याय– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सन्दर्भ**

**चतुर्थ अध्याय–डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियां में साहित्यिक सन्दर्भ**

(क) रस एव भावाभिव्यंजना

(ख) सौन्दर्य बोध, नवीन वर्णनकौशल एवं सृजनात्मकता

(ग) अलंकार–विधान

(घ) छन्द–योजना

**पंचम अध्याय– समकालीन रचनाकारों में डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री का स्थान**

**उपसंहार – अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता**

## <u>सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची</u>


1. डॉ. रामजी उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामनारायण लाल बेनी माधव प्रकाशन, इलाहाबाद, 1961

2. डॉ. राधाबल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी, प्रतिभा प्रकाशन, भाक्ति नगर, दिल्ली, 1990

3. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, मोती लाल बनारस दास, दिल्ली, 1996

4. आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2000

5. डॉ. भगवती लाल पुरोहित, संस्कृत : भाशा और साहित्य, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2004

6. डॉ. राधाबल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत काव्य भाास्त्र और काव्य परम्परा, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2004

7. डॉ. दीप्ति कमल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, राज पब्लिशिंग हाउस, 44, परनामी मन्दिर, जयपुर, 2008

8. डॉ. कृशण लाल, संस्कृत साहित्य परिशीलन, जे.पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,

9. श्री केशव मुसल गावकर, आधुनिक संस्कृत काव्य–परम्परा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी,

10. डॉ. (कु0) मृदुला जोशी, संस्कृत काव्य–परिभाषाओं का आलोचनात्मक अध्ययन, इण्डो–विज़न प्रा. लि.,